CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

B-1

शास्त्र संग्रहालय एवं अनुसंधान ट्रस्ट

SHASTRA MUSEUM
शास्त्र संग्रहालय एवं अनुसंधान ट्रस्ट
S.M.A.R.T.
AND RESEARCH TRUST

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

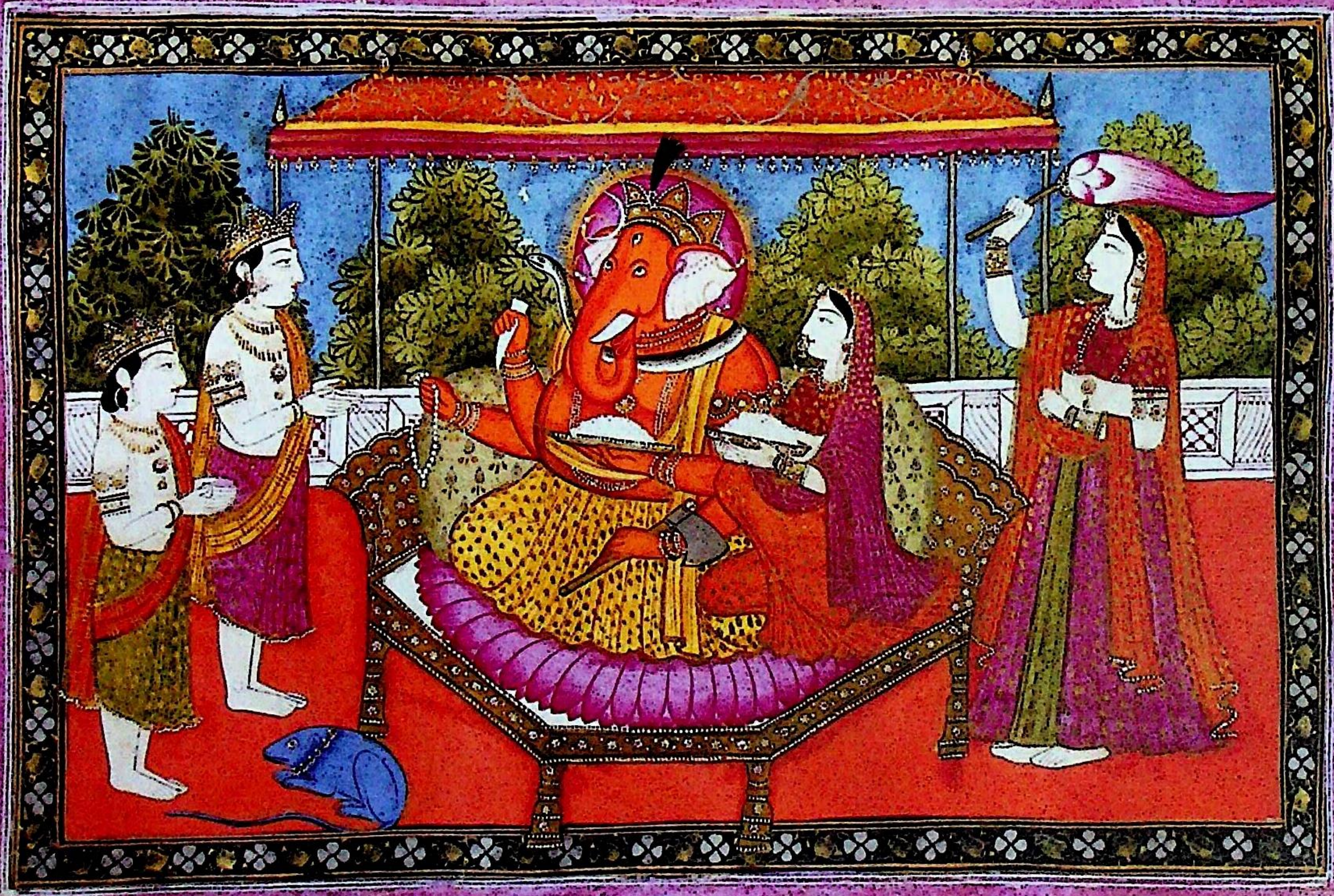

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शास्त्र मंदिरम्

पुरुषार्थ चतुष्टय एवं शांतिमय सनातन जीवनशैली की प्राप्ति के लिए एक अद्भुत 'शास्त्र मंदिरम्' के निर्माण का संकल्प लिया गया है। इस महान निर्माण कार्य में 'आत्मनो मोक्षार्थं जगत् हिताय च' भाव से आपके उदात्त सहयोग हेतु मार्मिक निवेदन/अपील

जैसे किसी देश की व्यवस्था चलाने के लिए उस देश का संविधान सर्वोपरि होता है, वैसे ही समाज के अनुत्तरित प्रश्नों एवं समस्याओं का समाधान हमारे सर्वोच्च आर्ष ग्रंथ करते हैं। वास्तव में शास्त्र हमारे सनातन आध्यात्मिक जीवन के संविधान ही हैं। आज सनातन ग्रंथों के साथ एक बड़ी समस्या और चुनौती यह है कि इतिहास में हुए अनेक आक्रमणों, धर्म परिवर्तनों एवं विद्वत्ता के अहम् के कारण हमारे सनातन ग्रंथ नष्ट हो गए या उनमें क्षेपक जोड़ दिए गए। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि हमारे पूज्य ग्रंथों से भ्रांत धारणाओं के दृष्टांत दिए जाने लगे। अनाधिकारी स्वयंभू विद्वानों द्वारा शास्त्र-ग्रंथों के उद्धरणों की मनमानी व्याख्याएँ होने लगीं।

इन समस्याओं के निराकरण का कार्य कठिन है, परंतु शोधपरक दृष्टि एवं ग्रंथों की सुलभ उपलब्धता से इसे सरल बनाया जा सकता है। इसी महान उद्देश्य की सिद्धि के लिए एक सुचारु शास्त्र मंदिरम् का निर्माण, उसका प्रबंधन एवं संरक्षण परमावश्यक है।

यद्यपि हम संस्कृत भाषा के जानकार अथवा विद्वान नहीं हैं, किन्तु प्रारंभ से ही हमारा ध्येय भारतीय सनातन आर्ष शास्त्रों के संग्रह, संरक्षण एवं संवर्द्धन का रहा है जो प्रत्येक दौर के लिए उपयोगी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे में शास्त्र मंदिरम् की कल्पना मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की जीवंत संकल्पना है। यह अध्ययन, अध्यापन, शोध, संवाद, संगोष्ठी एवं साधना में तल्लीन सनातन जीवनशैली है। संपूर्ण मानव जाति, विशेष रूप से युवा वर्ग को आधुनिक एवं पुरातन अनुवांशिकी, सृष्टिक्रम, ऋषि-कृषि, आर्ष ज्ञान-विज्ञान, आहार-विहार, योग, स्वास्थ्य, चरित्र-निर्माण, पर्यावरण, खेलकूद, संगीत एवं शास्त्र-सम्मत जीवनशैली का ज्ञान सुयोग्य एवं प्रशिक्षित गुरुजनों के प्रबंधन एवं मार्गदर्शन में कराना ही शास्त्र मंदिरम् का परम ध्येय होगा।

काशी ही क्यों?

काशी सनातन काल से ही भारतीय संस्कृति, धर्म एवं सर्वविद्या का केंद्र रही है। उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी कोने में स्थित काशी अद्भुत, अतुल्य एवं अद्वितीय है। यह विश्व के पुरातन एवं पवित्र शहरों में से एक है। भारत की विश्व प्रसिद्ध यह शिव नगरी, जिसे वाराणसी या बनारस भी कहते हैं, गंगा के वाम (उत्तर) तट पर वरुणा और असि नदियों के बीच बसी हुई है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। सोलह महाजनपदों में भी इसका प्रमुख उल्लेख आता है। यह सनातन धर्म का केंद्र बिंदु होने के साथ-साथ कई अन्य पंथों, संप्रदायों एवं मत-मजहबों की संगम स्थली भी है। चौबीस में से चार जैन तीर्थंकरों [पार्श्वनाथ (23वें), सुपार्श्वनाथ (7वें), श्रेयांसनाथ (11वें) एवं चंद्रनाथ (8वें)] की जन्मस्थली काशी ही है, जिसके कारण जैन धर्मावलंबियों की भी काशी में गहरी आस्था है। संबोधि प्राप्ति के बाद भगवान बुद्ध का पहला धर्मोपदेश वाराणसी स्थित सारनाथ में ही हुआ था, जिसे बौद्ध जगत में 'धर्मचक्रप्रवर्तन' कहा जाता है। भारत ही नहीं, भारत के बाहर के भी बौद्ध देशों एवं वहाँ के अनुयायियों की अगाध श्रद्धा इस पावन नगरी में है।

काशी में प्राचीन काल से ही समय-समय पर अनेक महान विभूतियों का वास रहा है। इनमें सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, महर्षि अगस्त्य, महर्षि वेदव्यास, धन्वंतरि, सुश्रुत, अष्टाध्यायी व्याकरण के प्रणेता पाणिनि, योग के प्रणेता पतंजलि, अद्वैत वेदांत के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

XS-MoE-C

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रणेता आदि शंकराचार्य, पुष्टिमार्ग के प्रणेता वल्लभाचार्य, स्वामी रामानन्दाचार्य, गोस्वामी तुलसीदास, रैदास, कबीर, तैलंग स्वामी, क्रियायोग के प्रणेता श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय, स्वामी शिवानन्द, महान अघोराचार्य बाबा कीनाराम, धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज आदि के नाम प्रमुख हैं। इन विभूतियों ने मोक्षनगरी काशी से ही मानवता का उद्‌बोधन किया।

व्याकरण और योग के प्रणेता क्रमशः ऋषि पाणिनि और पतंजलि का काशी से गहरा नाता है। दोनों का जन्म अन्यत्र हुआ, किन्तु उन्होंने काशी को अपनी साधनास्थली बनाया। काशी में आज भी प्रत्येक वर्ष नागपंचमी के पर्व पर योगसाधकों द्वारा ऋषि पतंजलि का जन्मदिवस मनाया जाता है। इस दिन काशी के जैतपुरा क्षेत्र के प्रसिद्ध नागकुआँ पर जनमानस दर्शन और पूजा के लिए उमड़ता है। काशीवासी आज भी नागपंचमी के दिन 'छोटे गुरु का, बड़े गुरु का नाग लो भाई नाग लो' कहकर नाग के चित्र बाँटते हैं, क्योंकि पतंजलि को शेषनाग का अवतार माना जाता है।

इनके साथ ही संत कबीर, गोस्वामी तुलसीदास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं० ओंकारनाथ ठाकुर, भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ, पं० रविशंकर, पं० छन्नूलाल मिश्र, पं० हरिप्रसाद चौरसिया आदि विभूतियों की कर्मस्थली काशी ही है।

वाराणसी गायन, वाद्य एवं नृत्य तीनों विद्याओं का केंद्र रहा है। भारतीय कंठ संगीत क्षेत्र में सुमधुर ठुमरी काशी की विशेष देन है। इसमें धीरेन्द्र बाबू, बड़ी मोती, छोटी मोती, सिद्धेश्वरी देवी, रसूलन बाई, काशीबाई, अनवरी बेगम, शान्ता देवी, गिरिजा देवी, राजन-साजन मिश्र आदि का नाम समस्त भारत एवं विश्व में बड़े गौरव एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। इसके अतिरिक्त गायन कला में बड़े रामदास तथा श्रीचन्द्र मिश्र का भी कोई सानी नहीं है। तबला वादकों में कंठे महाराज, अनोखे लाल, गुदई महाराज उर्फ पं० समता प्रसाद, पं. किशन महाराज आदि देश-विदेश में अपना नाम कर चुके हैं। नृत्य विधा, जिसमें स्वयं नटराज भगवान शिव विराजते हैं, में गोपीकृष्ण, सुखदेव महाराज, सितारा देवी, माता प्रसाद, चौबे महाराज, पाण्डे महाराज, विशाल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

ding IKS-MoE

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृष्ण, सौरभ मिश्र, गौरव मिश्र आदि प्रतिभाएँ काशी में ही पैदा हुई हैं।

काशी के अखाड़ा शकूर खलीफ़ा ने कुश्ती के क्षेत्र में अनेक प्रतिभाएँ पैदा की हैं। शिल्प उद्योग में भी बनारस की वस्त्रकला, काष्ठ कला एवं ताम्र कला विश्व प्रसिद्ध है। भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सन् 1857 की महान वीरागंना रानी लक्ष्मीबाई का जन्म वाराणसी में ही हुआ था। उनका बचपन का नाम मणिकर्णिका था, लेकिन प्यार से उन्हें मनु कहा जाता था। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रणेता भारतरत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की कर्मस्थली काशी ही बनी।

काशी के बाबू शिवप्रसाद गुप्त भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, परोपकारी, राष्ट्रवादी कार्यकर्त्ता तथा महान द्रष्टा थे, जिन्होंने काशी विद्यापीठ की स्थापना की एवं 'आज' नाम से एक राष्ट्रवादी दैनिक पत्र निकाला। उन्होंने ही भारत माता मंदिर का भी निर्माण करवाया।

काशी के संस्थापक 'काश' के प्रपौत्र काशीराज 'धन्व' के पुत्र धन्वन्तरि थे, जिन्हें आयुर्वेद का देवता माना जाता है। इन्होंने अमृतमय औषधियों की खोज की। इनके ही वंश में काशीराज दिवोदास भी हुए, जिन्होंने शल्य चिकित्सा का विश्व का पहला विद्यालय काशी में ही स्थापित किया, जिसके प्रधानाचार्य सुश्रुत थे, जिनकी जन्मस्थली एवं कर्मस्थली दोनों काशी ही थी। 'सुश्रुत संहिता' के प्रणेता होने के साथ ही उन्हें विश्व का पहला शल्य चिकित्सक भी माना जाता है। इन्हें 'फादर ऑफ प्लास्टिक सर्जरी' भी कहा जाता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत् ॥

अर्थात् सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगल के साक्षी बने और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशारदायै नमः ॥ श्रीदक्षिणामूर्तये नमः
ॐ नमः सकलकल्याणभाजनाय पिनाकिने ॥ नमो लक्ष्मीनिवासाय
देवतायै गिरे नमः ॥ १ ॥ प्रवालाद्रिप्रस्थस्फुरितनिचयपर्यायवपुषे ॥ नमो विघ्न
श्रेणीविघटनपटिष्ठाय महसे ॥ जगत्प्रादुर्भावस्थितिलयनिदानाय मह
वनाविनोदासक्ताय प्रणतफलसिद्धिप्रतिभुवे ॥ यदिन्दिरानाथपुरंदराद्यै
राराधितं भक्तिभरार्द्रयोगैः ॥ श्रीवेङ्किकायाश्च महः किमपि मोहनकपट
प्रेशावं केशवम् ॥ कांतेऽकांतामपि परं पुरुषं स्तुवानां कंठीकृताय रसना
यं नियं स्तुतो नः ॥ श्रीनेन मानमधिगच्छति यादृशानसापावेनी हरविभक्त
नञः शिवेवः ॥ आसीदसीमगुणरत्नकलानुरागाद्भ्रमपस्थभूतप्रभ
भीमिष्टन[illegible]काशाः ॥ लोकेस्मटाद्दहिप्यनोगुणसविविष्टः श्रीरत्नमाल
नृपतिर्भुवनैकरत्नम् ॥ तस्यात्मजा भरद्दमालइतिप्रसिद्धः सिद्धांगमार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय वाङ्मय के इस सार्वभौम श्लोक के अर्थ में छिपे इस महान उद्देश्य व मंगल भाव से प्रेरित और प्रस्तावित इस अद्भुत 'शास्त्र मंदिरम्' के लिए काशी से दिव्यतर कोई दूसरा स्थान नहीं हो सकता है।

हमारी युवा पीढ़ी सनातन धर्म संदेश एवं सनातन जीवनशैली के दिव्य लाभों को किस प्रकार समझ एवं आत्म-सात कर पाएगी, यह एक यक्ष प्रश्न हमारे सामने उपस्थित है। हम यह महसूस करते हैं कि एक शास्त्र मंदिरम् के अभाव में हिन्दू शास्त्रों, संस्कृति एवं विचार-रत्नों की शिक्षा-दीक्षा एवं प्रचार-प्रसार की सततता में बाधा उत्पन्न हो रही है। नैतिक शिक्षण एवं चरित्र-निर्माण की लक्ष्य प्राप्ति अवरुद्ध है। धर्मप्राण जनमानस, सनातन जीवनशैली एवं सनातन शास्त्रों का यथेष्ट लाभ उठाने से अभी तक वंचित है। प्रस्तावित शास्त्र मंदिरम् इस दिशा में एक समग्र, सार्थक, विनम्र एवं लोक-कल्याण से प्रेरित निःस्वार्थ प्रयास है। इस शास्त्र मंदिरम् में लोकहित में तमाम विसंगतियों के निवारण हेतु ठोस क्रियात्मक उपायों पर समग्र चिंतन, मंथन व संवाद स्थापित किया जाएगा, जिससे मानव जीवन में नयी ऊर्जा, स्फूर्ति, संवेदना एवं संचेतना का

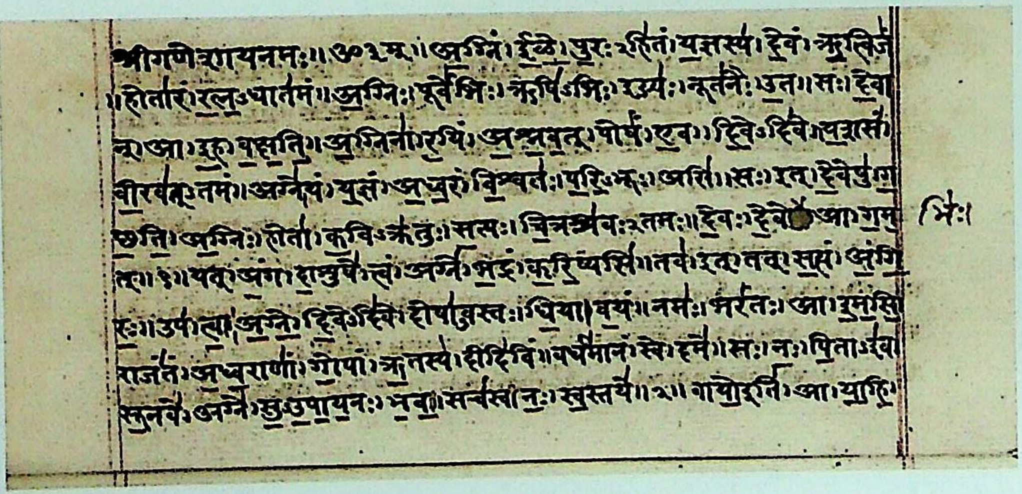
श्रीगणेशायनमः ॥ ॐ ॥ अग्निं । ईळे । पुरःऽहितं । यज्ञस्य । देवं । ऋत्विजं
॥ होतारं । रत्नऽधातमं ॥ अग्निः । पूर्वेभिः । ऋषिऽभिः । ईड्यः । नूतनैः । उत ॥ सः । देवा
न् । आ । इह । वक्षति ॥ अग्निना । रयिं । अश्नवत् । पोषं । एव ॥ दिवेऽदिवे । यशसं
वीरवत्ऽतमं ॥ अग्ने । यं । यज्ञं । अध्वरं । विश्वतः । परिऽभूः । असि ॥ सः । इत् । देवेषु । ग
च्छति ॥ अग्निः । होता । कविऽक्रतुः । सत्यः । चित्रश्रवःऽतमः ॥ देवः । देवे[भिः] । आ । गमत् भिः।
त् ॥ १ ॥ यत् । अंग । दाशुषे । त्वं । अग्ने । भद्रं । करिष्यसि ॥ तव । इत् । तत् । सत्यं । अंगि
रः ॥ उप । त्वा । अग्ने । दिवेऽदिवे । दोषाऽवस्तः । धिया । वयं ॥ नमः । भरंतः । आ । इमसि
॥ राजंतं । अध्वराणां । गोपां । ऋतस्य । दीदिविं ॥ वर्धमानं । स्वे । दमे ॥ सः । नः । पिताऽइव
सूनवे । अग्ने । सुऽउपायनः । भव ॥ सचस्व । नः । स्वस्तये ॥ २ ॥ वायो इति । आ । याहि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
स्फुरण होगा, जन-जागृति आयेगी तथा तन-मन-प्रकृति एवं ब्रह्मांड नियंता के साथ उचित तादात्म्य स्थापित होगा। शास्त्र मंदिरम् प्रज्ञा, भाव एवं श्रद्धापूर्ण अनुशीलन के साथ ही कलुष प्रक्षालन का सर्वोत्तम साधन बन सकता है।

निःसंदेह शास्त्र धराधाम पर आस्तिकता का प्रचार-प्रसार, श्रद्धाभाव का स्फुरण तथा मन-मस्तिष्क में संस्कार अर्जन कराता है। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि शास्त्र मंदिरम् का अधिष्ठान विद्यार्थियों, शोधार्थियों, स्वाध्यायियों, साहित्यप्रेमियों एवं मर्मज्ञों द्वारा समान रूप से समादृत होगा।

शास्त्र वास्तव में अभय देने वाले हैं। अभय से ही असीम सुख संभव है। इसीलिए अपनी समग्र अनुभूतियों एवं शाश्वत सत्य को कबीरदास जी मात्र दो पंक्तियों में उद्‌बोधित करते हैं –

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।

यहाँ संत कबीर का यही संदेश है कि छोटे से छोटे कणों, सूक्ष्मतम जीवों एवं स्वयं में भी मेरे लाल अर्थात् ईश्वर का ही वास है। 'धर्मो रक्षति रक्षितः' एक लोकप्रिय सनातन वाक्यांश है, जो महाभारत एवं मनुस्मृति में मिलता है। इसका तात्पर्य है कि जो धर्म यानी सत्य की रक्षा करता है, उसकी रक्षा स्वयं धर्म अर्थात् ईश्वर करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि –

धरम न दूसर सत्य समाना, आगम निगम पुरान बखाना।

धर्म की इससे सुंदर, सरल एवं संक्षिप्त व्याख्या और क्या हो सकती है, जिसमें सत्य को ही धर्म माना गया है, जिसकी पुष्टि आगम, निगम एवं पुराण सहित सभी सद्ग्रंथ करते हैं? गोस्वामी जी पुनः धर्म-अधर्म को समझाते हुए लिखते हैं –

परहित सरिस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

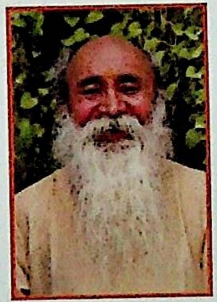

वेदव्यास जी भी अपनी अमृत वाणी में उद्घोषणा करते हैं –

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयं।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

परोपकार से बड़ा न कोई धर्म या पुण्य कार्य है, न दूसरों को पीड़ा पहुँचाने से बड़ा कोई पाप या अधर्म है। अतः मानव जीवन में परोपकार एवं मानवता की रक्षा से बड़ा कोई दूसरा उद्देश्य हो ही नहीं सकता।

तभी तो मनीषियों ने कहा है –

मानवकल्याणः आत्मनः मोक्षः

सबके लिए जीना ही जीवन है। मात्र अपने लिए जिए तो क्या जिए।

शास्त्र मंदिरम् की संकल्पना सर्वकल्याणकारी एवं सर्वांगीण उत्थान की भावना, श्रद्धा एवं विश्वास से प्रेरित है। यदि शास्त्र मात्र संदेशों एवं सूत्रों के शाब्दिक अर्थों तक सीमित रह जाएँगे तो मानव अपने संकल्पित गंतव्य तक नहीं पहुँच पाएगा। वस्तुतः शास्त्र समुद्र और आकाश की भाँति हैं जहाँ खोज की यात्रा समाप्त नहीं हो सकती है। अतः 'शास्त्र मंदिरम्' के निर्माण का कार्य पवित्र एवं सब विधि से मंगलकारी होने के साथ ही वर्तमान युग की परम आवश्यकता भी है। ऐसा महान कार्य सभी के सक्रिय प्रयास एवं उदार सहयोग के बिना संभव नहीं है। अतः हम देश-विदेश, विशेष रूप से काशीवासियों से मुक्त हृदय से सहयोग करने का आग्रह करते हैं। पवित्र शिवनगरी काशी में एक अद्वितीय 'शास्त्र मंदिरम्' का निर्माण संभव बनाने के लिए कृपया आगे आएँ। अपने सामर्थ्यानुरूप सहायता एवं आर्थिक मदद के लिए हम आपसे नम्र एवं मार्मिक निवेदन करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शास्त्र मंदिरम्

सनातन जीवनशैली का एक जीवंत प्रतिरूप

(शास्त्र मंदिर की परिचयात्मक लघु फिल्म के लिए लिखी गई स्क्रिप्ट)

क्या आपने कभी सोचा है कि प्रकृति की इस विशाल रंगभूमि का सूत्रधार कौन है? हम कौन हैं? कहाँ से आये हैं? कहाँ जाना है? क्या नित्य है? क्या अनित्य है? क्या हम अपनी कहानी जानते हैं? यदि नहीं, तो क्या दुनिया को जानने से पहले खुद को जानना बहुत जरूरी नहीं है? ये सारे प्रश्न उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के एक छोटे-से गाँव 'बेथर' के रहने वाले रामानंद तिवारी को मात्र 14 वर्ष की उम्र से ही बेचैन करने लगे थे। काशी में जीवनयापन के लिए पुस्तक की दुकान पर चपरासी का कार्य करते हुए वे पुस्तकों में ही इन गूढ़ प्रश्नों का उत्तर खोजने लगे। शून्य से शिखर तक यानी सड़क पर किताबें बेचने से लेकर नेपाल के सबसे बड़े पुस्तक प्रतिष्ठान पिल्ग्रिम्स बुक हाउस की स्थापना तक हर दिन उनका यह विश्वास प्रबल होता गया कि उनके सभी प्रश्नों एवं जटिलतम समस्याओं के समाधान सनातन वाङ्मय यानी हिंदू शास्त्रों में ही सन्निहित हैं।

ठीक ही तो है... सत्य को जानने और समझने के माध्यम हमारे वेद ही तो हैं। 'वेद' शब्द की व्युत्पत्ति 'विद्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'जानना' (To Know)।

वेद जीवन की ऐसी किताब है, जिसे पढ़े बिना न खुद को समझ सकते हैं, न उस महान ईश्वर को ही, जिसने इस सृष्टि की रचना की। उपनिषद् तो भारतीय जनमानस को समझने के लिए एक अनिवार्य सद्ग्रंथ हैं, न कि वैकल्पिक। हम ईश्वर की उपासना के लिए मंदिरों का निर्माण तो कर रहे हैं, किंतु उस ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाने वाले हमारे शास्त्र घरों और पुस्तकालयों की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलमारियों में पड़े धूल फाँक रहे हैं। परिणाम यह हुआ है कि रखरखाव की सुदृढ़ व्यवस्था के बिना हमारे ज्ञानस्रोत शास्त्र सड़-गल रहे हैं और दीमकों द्वारा नष्ट किए जा रहे हैं।

रामानंद तिवारी की इसी पीड़ा ने जन्म दिया एक अद्भुत कल्पना को। यह क्रांतिकारी कल्पना थी- एक शास्त्र मंदिर की स्थापना की। इस कल्पना को साकार करने के लिए वे 50 वर्षों से शास्त्रों को संग्रहित व संरक्षित करने के लिए भगीरथ प्रयास करते आ रहे हैं। इस संग्रहण के पीछे कोई निजी स्वार्थ नहीं है। अभिलाषा है तो बस इतनी सी कि शास्त्र म्यूजियम का विषय एवं नमूना बनने के बजाय मानव जीवन का मार्गदर्शन करें। दुर्भाग्यवश आज तक विश्व में कहीं भी इस तरह का कोई 'शास्त्र मंदिर' नहीं है, जो ईश्वर की प्रतिमा के साथ-साथ उस तक पहुँचने का मार्ग भी सुझाए। इसीलिए, रामानंद तिवारी ने काशी में शास्त्र मंदिरम् के निर्माण का संकल्प लिया है।

आखिर कैसा होगा यह शास्त्र मंदिरम्? आइए समझते हैं...

ज्ञान की पिपासा व अभिलाषा में भटक रहे मनीषियों के लिए शास्त्र मंदिरम् सिर्फ सनातन वाङ्मय व हिंदू शास्त्रों के अध्ययन का मात्र केंद्र ही नहीं होगा, बल्कि यह उस वैदिककालीन जीवनशैली का जीवंत मॉडल भी होगा, जिसने भारत को विश्व का एक अद्भुत एवं अद्वितीय देश बनाया। गुरुकुल के पवित्र वातावरण में मंत्रोच्चार करते गुरु-शिष्य हों या फिर भीम व दुर्योधन की तरह मल्लयुद्ध करते नौजवान, यज्ञशाला में संपूर्ण विधि-विधान से आहुति देते ऋषि-मुनि हों या फिर संवादशाला में शास्त्रार्थ करते विद्वान्, पाकशाला में कंडों पर भारतीय मसालों से बन रहे वैदिककालीन भोज्य पदार्थ हों या खेतों में ऋषि-कृषि कर रहे किसान, रंगशाला में ऐतिहासिक पात्रों व नैतिक कथाओं को अपने अभिनय से जीवंत करते तथा नाट्यशास्त्र का प्रदर्शन करते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिनेता-अभिनेत्री हों या फिर जड़ी-बूटियों व प्राकृतिक लेपों से रोगियों का उपचार कर रहे वैद्य - सब आपको यहाँ एक साथ, एक परिसर में नज़र आयेंगे। सबसे अधिक जरूरी और ध्यानाकर्षक होगा वह महान् ग्रंथालय, जो आपको वेदों, उपनिषदों, वेदांगों, उपांगों आदि के ज्ञान की अलौकिक यात्रा पर ले जायेगा। इस मंदिर में आपको चारों वेद, 18 हस्तलिखित पुराणों और उपनिषदों के साथ छोटे-बड़े 8000 हिंदू शास्त्र मिलेंगे। यह मंदिर प्रतीक्षा करेगा उन मनीषियों की, जो इन शास्त्रों का विवेचन कर ज्ञान की यात्रा के द्वार खोलेंगे। यह मंदिर प्रतीक्षा करेगा लैपटॉप व मोबाइल फोन लिए उन युवक/युवतियों की जो इन बातों को अच्छी तरह जानते हैं कि आस्थाविहीन विज्ञान पंगु और विज्ञानविहीन आस्था अंधी होती है। यह संतोषजनक है कि पिछले 50 वर्षों से जिन शास्त्रों को तिवारी जी ने सहेज कर रखा है और अगली पीढ़ी को राह दिखाने का एक सपना देखा है उसको डिजिटलाइज कर ये युवा इन शास्त्रों को जन-जन तक पहुँचा पाएंगे।

है ना कमाल की बात! बिना किसी गैजेट के टाइम ट्रैवल किये, हम उस वैदिक काल से रू-ब-रू होंगे, जिसने भास्कराचार्य जैसे गणितज्ञों व आयुर्वेद जैसे चिकित्साशास्त्र को जन्म दिया। सन् 1543 में कॉपरनिकस ने सूर्य को ब्रह्माण्ड का केंद्र बताया था। उससे 1044 वर्ष पहले 499 ई0 में जीरो का आविष्कार करने वाले भारत के महान एस्ट्रोनॉमिस्ट आर्यभट्ट ने इस सच को प्रतिपादित कर लिया था। 3000 वर्ष पहले पहली प्लास्टिक सर्जरी ऋषि सुश्रुत ने की थी। उस काल के ऋषि हड्डियों को जोड़ने का ही नहीं, बल्कि आँख व गुर्दे की सफल सर्जरी का काम भी बखूबी अंजाम देते थे। आधुनिक कॉस्मॉलजी का जनक वैदिक विज्ञान ही है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। न्यूटन के जिस नियम ने फिजिक्स की आधारशिला रखी, उसे आर्यभट्ट की लिखी पुस्तक 'आर्यभट्टीयम्' ने बहुत पहले ही सिद्ध कर दिया था। आज जिस एटम ने पूरी दुनिया को हिला कर रखा है, उसका आविष्कार डॉल्टन से बहुत पहले ही भारतीय ऋषि कणाद कर चुके थे। हमारी गौरवशाली वैज्ञानिक परंपरा को इंगित करते इन तथ्यों को आप शास्त्र मंदिरम् में डिजिटल डिस्प्ले पर देख पाएंगे। यहाँ एक लाइट एंड साउन्ड शो भी होगा, जो हमारी परंपराओं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के पीछे छुपे विज्ञान को दिखाएगा। क्यों तुलसी को जल देना प्रकृति से मित्रता निभाना है? माथे पर लगने वाले तिलक का हमारे ज्ञान-तंतुओं से क्या संबंध है? ध्यान और योग क्यों किया जाता है? हवन करने से पर्यावरण कैसे शुद्ध हो जाता है?... ऐसे बहुत-सारे तथ्यों को टेक्नोलॉजी के माध्यम से इस शो में दिखाया जाएगा। हमें विश्वास है कि आज की पीढ़ी को भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहरों से परिचित कराने की दिशा में यह शास्त्र मंदिरम् सार्थक प्रयास सिद्ध होगा।

जब रामाजी के पास एक छोटा-सा नीड़ बनाने का भी साधन नहीं था, तब उन्होंने यह विराट स्वप्न देखा। यह स्वप्न कब संकल्प में बदल गया, इसका पता खुद रामाजी को भी नहीं हो पाया। पर, वे इतना समझ चुके थे कि जिस तरह उपनिषदों का फारसी अनुवाद करते हुए मुगल शहज़ादा दाराशिकोह को अपने प्रश्नों के उत्तर के लिए काशी की यात्रा करनी पड़ी थी, वैसे ही इस 'शास्त्र मंदिरम्' की कल्पना भी बाबा विश्वनाथ की नगरी में ही साकार होगी। इस अनूठे 'शास्त्र मंदिर' की संकल्पना को साकार करने के लिए रामाजी राष्ट्र के उन कर्णधारों की ओर उम्मीद भरी निगाहों से देख रहे हैं, जो आज की पीढ़ी के लिए प्राचीन भारत की वैभवशाली परंपरागत जीवनशैली के द्वार खोल सकें।

विजयलक्ष्मी सिंह

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योर्तिगमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशीक्षेत्रं तन्निवासो जाह्नवी चरणोदकम्
गुरुः विश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्म निश्चितम् ॥

स्कंदपुराण (उत्तरखंड, गुरुगीता, श्लोक 16)

गुरु का निवास स्थान काशी है। गंगाजी उनके चरणोदक (गुरु के चरणों को धोकर प्राप्त हुआ जल) के तुल्य है। गुरु साक्षात् विश्वेश्वर हैं और निश्चित ही वे मोक्षदायक ब्रह्म हैं।

श्री भुजंग रामराव बोबड़े

श्री भुजंग रामराव बोबड़े महाराष्ट्र स्थित हेरिटेज फाउंडेशन सहित अनेक अनुसंधान संस्थानों में निदेशक, कोऑर्डिनेटर, रिसर्च फेलो तथा सलाहकार आदि के रूप में अपनी सेवाएँ देने वाले युवा स्कॉलर हैं। भारतीय ज्ञान पद्धति, म्यूजियम और हेरिटेज स्टडीज के क्षेत्र में तकनीकी के प्रयोग, डिजिटाइजेशन, संग्रहालय और प्रदर्शनी डिजाइन, भारतीय कला और आर्कीटेक्चरल हेरिटेज तथा हस्तलिपियों आदि के क्षेत्र में शोध व अनुसंधान उनकी रुचि के विषय हैं। इस क्षेत्र में वे न्यू जर्सी, अमेरिका में भी अपनी सेवाएँ दे चुके हैं।

सम्प्रति वे वाराणसी में प्रस्तावित शास्त्र संग्रहालय एवं अनुसंधान केन्द्र के अध्यक्ष के तौर पर भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उन्होंने अपनी अनुभवी टीम के साथ इस अनुसंधान केन्द्र से जुड़े दस्तावेजों, शास्त्रों और ग्रंथों के डिजिटाइजेशन का काम शुरू कर दिया है। उनके सक्रिय व सहृदय सहयोग से इस कार्य को उल्लेखनीय गति मिली है। मानवता के लिए समर्पित इस सेवा कार्य में उनकी योग्यता का लाभ मिलने से हमें विश्वास है कि उद्देश्य की गुणवत्ता और सार्थकता में अभिवृद्धि होगी। हम उनके प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥

दुर्जन सज्जन बन जाएँ, सज्जन शांति को प्राप्त करें, शांत पुरुष बंधनों से मुक्त हो जाएँ और जो मुक्त हो चुके हैं, वे दूसरों को भी मुक्त करें।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ता,
न्याय्येन मार्गेन महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यम्,
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥

प्रजा का कल्याण हो, राजा न्यायपूर्वक पृथ्वी का पालन करें, गायों और ब्राह्मणों का सदा कल्याण हो, सभी लोग सुखी हों।

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भया॥

उचित मौसम में वर्षा हो, पृथ्वी प्रचुर मात्रा में फसलों से समृद्ध हो, देश संकट से मुक्त हो तथा ब्राह्मण निडर हों।

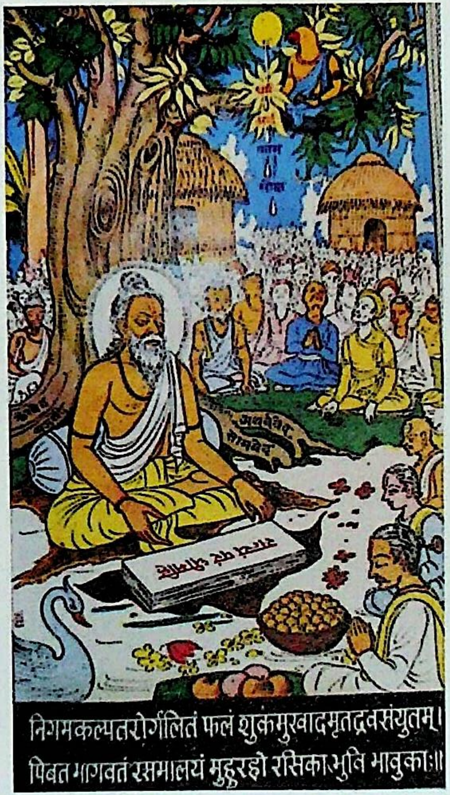

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु।।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन की कठिनाइयों को साहसपूर्वक पार कर सके। सबको अपने जीवन में शुभता, सौभाग्य और कल्याण का अनुभव हो। प्रत्येक व्यक्ति को उसके सत्कर्मों के अनुसार उचित और मंगलकारी फल प्राप्त हो। हर कोई हर जगह, हर परिस्थिति में आंतरिक आनंद और संतोष के साथ जीवन व्यतीत करे।

आ नो भद्राः कृतवो यन्तु विश्वतः
तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।
सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

सभी दिशाओं से हमारे पास शुभ विचार आएँ। मेरा मन सदा कल्याणकारी संकल्पों से मुक्त रहे। सभी आशाएँ (कामनाएँ) मेरी मित्र बनें। पृथ्वी हमारी माता है और हम सब उसकी संतान हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं ग्वं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः
शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं ग्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः
सा मा शान्तिरेधि।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

आकाश में शांति हो, अंतरिक्ष में शांति हो, पृथ्वी पर शांति हो, जल में शांति हो, औषधियों में शांति हो, वृक्षों में शांति हो, समस्त देवताओं में शांति हो, सर्वत्र शांति हो, शांति ही शांति हो। और यही शांति मेरे भीतर भी प्रतिष्ठित हो।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु।
मा विद्विषावहै।
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

(तैत्तरीय उपनिषद्)

हे परमात्मा! आप हम दोनों (गुरु एवं शिष्य) की रक्षा करें। हम दोनों को समान रूप से पोषण और सामर्थ्य प्राप्त हो। हम एक साथ परिश्रम कर ज्ञान में प्रगति करें और आत्मबल अर्जित करें।
हमारा अध्ययन तेजस्वी, सार्थक और कल्याणकारी हो। हम एक दूसरे के प्रति द्वेष या विरोध की भावना न रखें। हे प्रभु! सर्वत्र शांति ही शांति बनी रहे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

– ईशावास्योपनिषद्

परमात्मा पूर्ण है। यह सृष्टि उसी पूर्ण ब्रह्म से उत्पन्न है, इसीलिए यह भी पूर्ण है। उस पूर्ण परमात्मा से इस पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति होने पर भी परमात्मा की मूल पूर्णता में ह्रास नहीं होता।

जिस प्रकार एक दीपक से अनगिनत दीप जल जाने पर भी मूल दीपक की ज्योति क्षीण नहीं होती, उसी प्रकार परमात्मा अनंत, अखंड और सदा पूर्ण है।

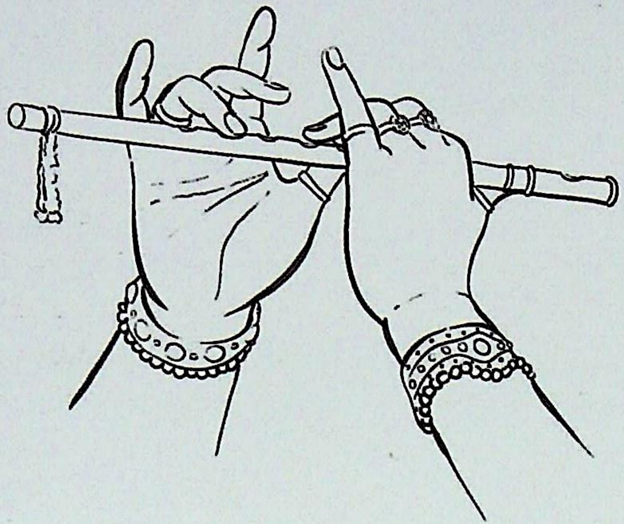

रसो वै सः। रस ह्योवायं लब्ध्वानन्दी भवति।

– तैत्तिरीय उपनिषद्

वह (परमब्रह्म) रसस्वरूप है। जो इस रस को पा लेता है, वही आनंदमय बन जाता है। अर्थात परमात्मा ही सच्चा आनंद है। जब मनुष्य उस परमात्मा रूपी आनंद का अनुभव करता है, तभी वह भीतर से पूर्ण रूप से आनंदित होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्

हम उस सूर्य देवता (सविता) के उत्कृष्ट तेज का ध्यान करते हैं, जो हमें ज्ञान और बुद्धि प्रदान करते हैं। राजर्षि विश्वामित्र को गायत्री मंत्र के अनुष्ठान से ही ब्रह्मर्षि का पद प्राप्त हुआ था, इसलिए राजर्षि से ब्रह्मर्षि बनाने की शक्ति जिस गायत्री मंत्र में है, उसकी महिमा जितनी भी कही जाए थोड़ी है।

याज्ञवल्क्य ऋषि ने गायत्री के विषय में कहा है :

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।
गाययास्तु पर नास्ति दिवि चेह च पावनम्॥

अर्थात् गायत्री वेद (ज्ञान) की माता तथा सभी पापों को नष्ट करने वाली एक शक्ति है। इस भूमंडल तथा परलोक में भी इससे बढ़कर पवित्र और कुछ नहीं है। ज्ञान प्रदान कर अज्ञान को दूर करने की पवित्र शक्ति गायत्री मंत्र में है।

इसलिए देवीभागवत पुराण में कहा गया है :

सर्वे शाक्ता द्विजाः प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः।
आदिशक्तिमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम् ॥

सभी द्विज (ब्राह्मण) शाक्त कहे गए हैं, क्योंकि वे वेदमाता आदि शक्ति गायत्री की उपासना करते हैं; अतः न वे शैव हैं और न वैष्णव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यतेमहि स्वराज्ये
(ऋग्वेद 5/66/6)
हम सब स्वराज के लिए यत्न करें।

आज जब हम स्वराज्य की बात करते हैं, तो अक्सर उसका आशय केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से जोड़ा जाता है, जबकि सच्चा स्वराज्य उससे कहीं अधिक व्यापक और गहरा है। यह आत्मनिर्भर जीवन, स्वेदशी चेतना और प्रकृति-सम्मत संतुलित जीवन-दर्शन पर आधारित है।

सनातनी रामानंद जी ने इसी स्वराज्य की परिकल्पना को साकार करने के लिए पिछले पंद्रह वर्षो से निरंतर श्रमशील रहते हुए कार्य किया है। उन्होंने सनातन संस्कृति, ग्राम्य जीवन, कृषि परंपरा, स्वदेशी ज्ञान-विज्ञान, अनुसंधान, स्वेदशी तकनीक तथा सहज जीवन-शैली को आत्मसात कर एक ऐसा जीवन आदर्श प्रस्तुत किया है, जो व्यक्ति को स्वावलंबी, समाज को सजग और राष्ट्र को सशक्त बना सकता है।

स्वराज्य एक ऐसी जीवन-दृष्टि है, जहाँ व्यक्ति अपने चरित्र, आचरण और संसाधनों का स्वामी स्वयं होता है। यह कोई राजनीतिक आंदोलन नहीं, बल्कि आत्मबोध है, जो हमें अपने संस्कार, श्रम और मिट्टी से जुड़कर प्राप्त होता है।

स्वराज्य वह है:

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ जीवन शहरी दिखावे पर नहीं, प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित होता है।

जहाँ शिक्षा केवल पुस्तिकीय जानकारी नहीं, बल्कि जीवन जीने की संतुलित कला सिखाती है।

जहाँ आत्मनिर्भरता का अर्थ है – भोजन, वस्त्र, तकनीक, सोच और संसाधनों में स्वदेशी तथा स्थानीय विकल्पों को अपनाना।

स्वराज्य का यह मॉडल गाँवों की शक्ति, स्वदेशी उद्योग और लोकजीवन के अनुभव समृद्ध ज्ञान पर टिका है। यह ऐसा आदर्श है, जिसे हर व्यक्ति अपने घर या गाँव में सहजता से अपना सकता है।

इस विचार का मूल यही है कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारतीय गाँव स्वावलंबी, सुसंस्कृत और संपन्न थे, लेकिन उपनिवेशवाद और पश्चिम-आधारित विकास मॉडल ने हमारी जड़ों को हिलाकर रख दिया। अब समय आ गया है कि हम फिर से स्वदेशी जीवनशैली की ओर लौटें, जहाँ उपभोग नहीं, बल्कि संतुलन और सहजता जीवन का आधार है।

सनातनी रामानंद जी का जीवन इस विचार का प्राणतत्त्व है। वह हमें प्रेरित करता है कि हम स्वेदशी जीवनशैली को न केवल समझें, बल्कि उसे अपने जीवन में उतारें और जन-जन तक उसका प्रसार करें।

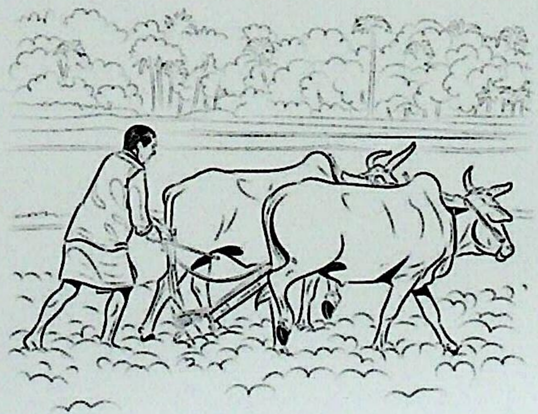

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वसुधैव कुटुंबकम्

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम् ॥

यह मेरा है, यह पराया है – ऐसा संकीर्ण विचार लघु चित्त के लोगों का होता है, किंतु जो उदारचरित हैं, वे सकल जगत को कुटुंबवत मानते हैं। ये विचार कितने उदात्त और उदार हैं! इतिहास बताता है कि मानव का विकास इसी दिशा में हो रहा है। कबीले, बिरादरी, जाति, धर्म और राष्ट्र के स्तरों से गुजरकर हम अंतर्राष्ट्रीय समाज के युग में प्रवेश कर रहे हैं। ऐसे समाज की प्रतिष्ठा के लिए जिन साधनों की आवश्यकता पड़ती है, वे सारे साधन एकत्र हो रहे हैं, सारा संसार एक सूत्र में बँध रहा है।

आज सारे संसार को एक सूत्र में पिरोने के भौतिक साधन विपुल हैं। ज्ञान-विज्ञान ने इन्हें सुलभ किया है। किंतु जब तक मानव अपनी संकीर्णता का परित्याग नहीं करता, अपनी क्षुद्र गतिविधियों और सीमाओं का अतिक्रमण नहीं करता, ससीम से असीम की ओर नहीं जाता तब तक वह इन साधनों का समुचित उपयोग नहीं कर सकता। आज की सबसे बड़ी समस्या यही है। संसार को एक करने के साधन विद्यमान हैं, किंतु मानव मन और मस्तिष्क अभी उसके लिए तैयार नहीं हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिक्षाप्रद वचन

(तैत्तिरीय उपनिषद् – शिक्षावल्ली)

1. सत्यं वद – सच बोलो।
2. धर्मं चर – धर्म का आचरण करो।
3. सत्यान्न प्रमदितव्यम् – सत्य से कभी विचलित न हो।
4. धर्मान्न प्रमदितव्यम् – धर्म के पालन से विमुख न हो।
5. स्वाध्यायान्मा प्रमदः – स्वाध्याय (अध्ययन और आत्मचिंतन) से कभी आलस्य न करें।
6. यानि अस्माकं सुचरितानि सेवितत्यानि – हमारे जो श्रेष्ठ आचरण हैं, उन्हीं का अनुसरण करो।
7. मातृदेवो भव – माता को देवता मानो।
8. पितृदेवो भव – पिता को देवता मानो।
9. आचार्यदेवो भव – गुरु (शिक्षक) को देवता मानो।
10. अतिथिदेवो भव – घर आए अतिथि को देवता मानो।

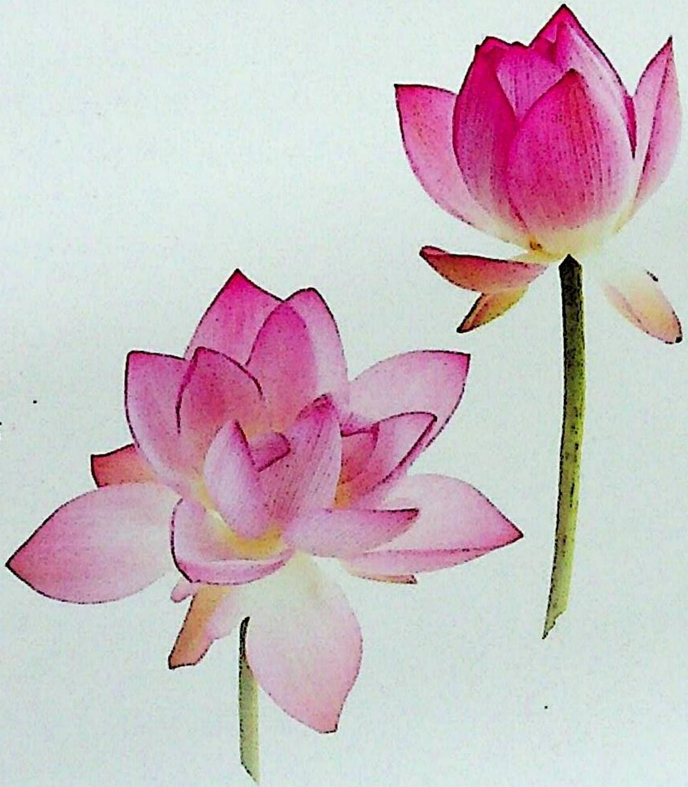

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंगम् न च वयः।

(उत्तररामचरितम्)

गुणवानों में पूज्यत्व का कारण उनके गुण होते हैं, न कि उनके लिंग या आयु। गुणवान व्यक्ति की सर्वोच्च संपदा उसके गुण होते हैं और वही वह समाज को समर्पित करता है। उसके विचारों में स्पष्टता, आचरण में शुचिता और उद्देश्य में लोकमंगल निहित होता है। वह समाज में न्याय, करुणा, सहअस्तित्व और विवेक के मूल्यों को स्थापित करता है। शिक्षा, संस्कार, नेतृत्व और सृजन जैसे विविध क्षेत्रों में उसकी उपस्थिति समाज को दिशा देती है। वह न केवल आत्मविकास की साधना करता है, अपितु दूसरों के विकास के लिए अवसर, प्रेरणा और आधार भी प्रदान करता है। ऐसे व्यक्तित्वों के माध्यम से ही समाज में संतुलन, समरसता और चहुँमुखी विकास की नींव रखी जाती है।

उत्तिष्ठत! जाग्रत! प्राप्य वरान्निबोधत!
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥

कठोपनिषद्

हे मानवों! उठो, जागो, श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुषों से ज्ञान प्राप्त करो। ज्ञानीजनों के अनुसार तत्त्वज्ञान का पथ अत्यंत कठिन है, जिसे पार करना तीव्र धार वाली छुरी पर चलने के समान है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचारों की शक्ति का उपयोग करने के लिए क्रिया का समन्वय बहुत आवश्यक है। कर्मण्य व्यक्ति के चरण सदैव ही यथार्थ की कर्मभूमि पर चलते हैं। कल्पना के आकाश लोक में नहीं।

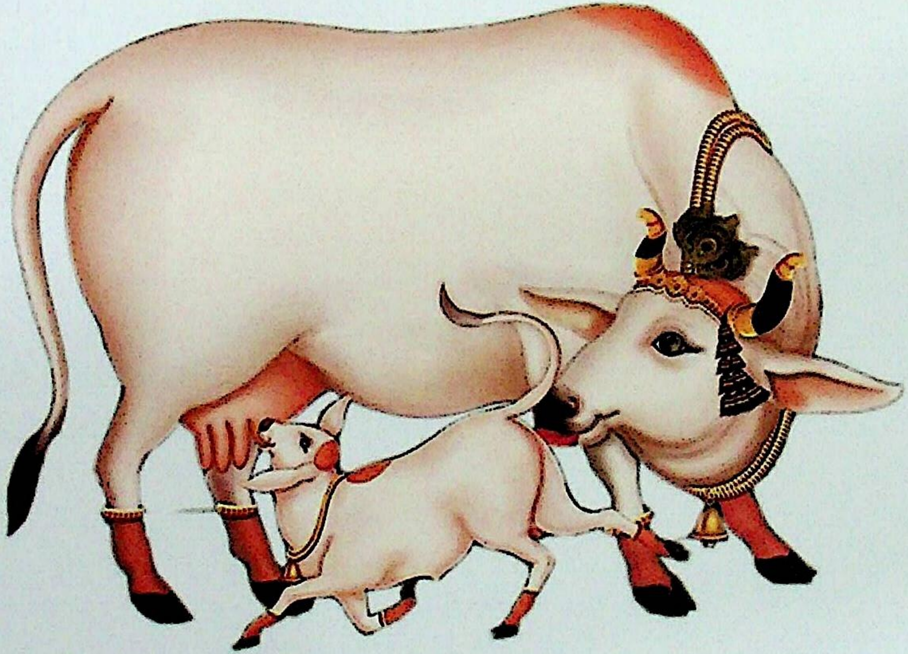

कर्म-प्रधान विश्व रचि राखा
कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति।

कर्मठ व्यक्ति को कौन, कहाँ और कब रोक पाया है!

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्यक् दिनचर्या

मनुष्य की दिनचर्या शास्त्र-पुराणोक्त वचनों के अनुसार होनी चाहिए, जिससे जीवन भगवत्पूजामय बन जाए।

प्रातः जागरण – प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त्त में (सूर्योदय से प्रायः डेढ़ घंटा पूर्व) उठ जाना चाहिए। आँख खुलते ही दोनों करतलों को देखते हुए निम्न श्लोक का पाठ करना चाहिए –

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूलेतुगोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्।।

हथेलियों के अग्रभाग में लक्ष्मी निवास करती हैं, मध्य भाग में सरस्वती और मूल में ब्रह्मा जी निवास करते हैं। अतः प्रातः हथेलियों का दर्शन करना आवश्यक है, इससे पुण्य लाभ होता है।

भूमि-वंदना – प्रातःकाल पृथ्वी पर पैर रखने से पूर्व शय्या पर बैठकर ही पृथ्वी माता का अभिवादन करना चाहिए और उन पर पैर रखने की विवशता के लिए उनसे क्षमा माँगते हुए निम्नलिखित श्लोक का पाठ करना चाहिए –

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे।।

(विश्वामित्र-स्मृति)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

24 घंटे में मनुष्य प्रायः 21600 श्वास लेता है। अतः प्रत्येक श्वास के साथ एक 'हंस' (21,600 बार) का स्वाभाविक जप हो जाता है।

'हकारेण बहिर्याति संकारेण विशेत् पुनः।
हंसहंसेत्यमुं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा।'

अतः प्रातःकाल एक बार प्रभु के चरणों में इसे मानसिक रूप से भी समर्पित कर देना चाहिए।

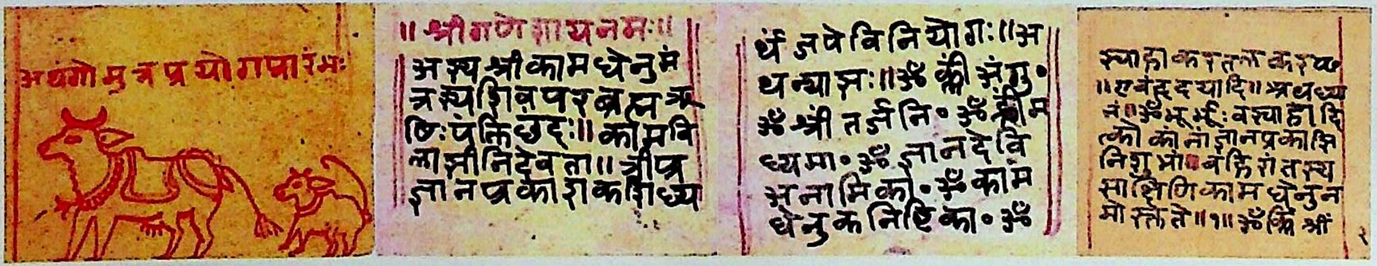

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनुस्मृति का प्रथम वैदिक विधान

'मनुस्मृति' का भारतीय साहित्य में विशेष स्थान है।

यः कश्चित् कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥

मनु मानव जाति के आदि पिता हैं और सभी क्षेत्रों में मानव जाति के पथप्रदर्शक हैं। इनके द्वारा रचित धर्मशास्त्र 'मनुस्मृति' विश्व का सर्वप्रथम विधान है, जिसके अनुकरण पर संसार के विधि-विधानों का समय-समय पर निर्माण हुआ है।

गीता के चौथे अध्याय के प्रारंभ में यह वर्णन मिलता है कि सृष्टि के आरंभ में भगवान नारायण ने जिस योग-ज्ञान का उपदेश सूर्य को दिया था, उसी ज्ञान का उपदेश सूर्य ने अपने पुत्र मनु को और मनु ने अपने पुत्र सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु को दिया था।

श्रीमद्भागवत (3/12) के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति के लिए ब्रह्माजी ने अविद्या, माया, सनकादि ऋषि, रुद्र तथा मरीचि आदि दस मानस-पुत्र उत्पन्न किए। इनसे सृष्टि की वृद्धि न देखकर उन्होंने मनु-शतरूपा को उत्पन्न किया। इन दोनों से ही मानव-सृष्टि हुई। इन्होंने धर्मपूर्वक प्रजा का पालन करके धर्मराज्य का आदर्श प्रस्तुत किया। मनु ने मानव-संस्कृति के निर्माण के लिए जिस मानव-धर्मशास्त्र की रचना की, वही मानव जाति का आदि संविधान है। मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाकर उसे नारायण बनाना इस महान ग्रंथ का सबसे बड़ा संदेश है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो वधीत्॥
(मनु० 8/15)

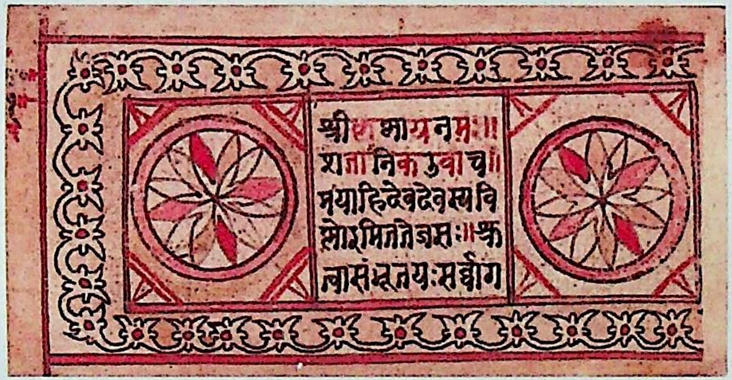
श्री गणेशाय नमः ॥
शतानिक उवाच ॥
मया हि देवदेवस्य वि
ष्णोरमिततेजसः ॥ श्रु
तासंभूतयः सर्वा ग

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

अपने धर्म में रहकर ही कल्याण संभव है। यही प्रेरणा पग-पग पर दी गयी है। अपने-अपने धर्म तथा कर्त्तव्य का पालन करते हुए, राष्ट्रभक्ति को सर्वोपरि महत्त्व देते हुए, सन्मार्ग पर चलने वाले हर मानव का कल्याण होता है – यह केवल सनातन धर्म ही कहता है।

पापाचरण के लिए कोई स्थान न हो, तभी स्वतः कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा –

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।
(गीता 18/46)

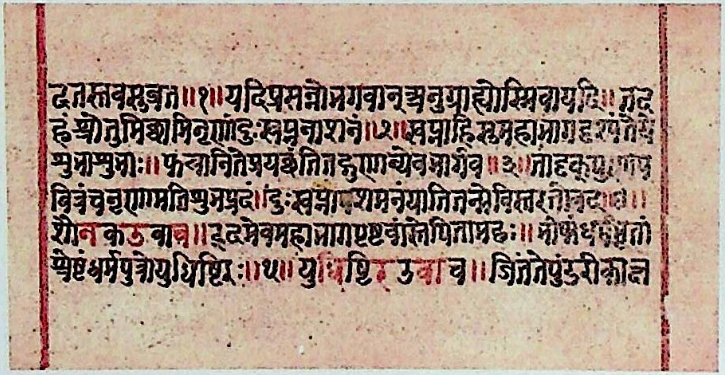
दतस्तवश्रुतम् ॥ १ ॥ यदि प्रसन्नो भगवान् अनुग्राह्योस्मि वा यदि ॥ तद
हं श्रोतुमिच्छामि नृणां दुःस्वप्ननाशनं ॥ २ ॥ [illegible]
शुभाशुभाः ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] दुःस्वप्न [illegible] ॥
शौनक उवाच ॥ [illegible] पितामहः ॥ [illegible]
[illegible] धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ५ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ जितंते पुंडरीकाक्ष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्म के दस लक्षण

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

(मनुस्मृति 6/92)

धर्म, क्षमा, संयम, अस्तेय, पवित्रता, इंद्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य एवं अक्रोध – ये धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं।

1. **धैर्य (धृति):** संकट, हानि या अपयश की स्थिति में आत्म विस्मृति या निराशा के बिना स्थिर और संतुलित रहना।

2. **क्षमा :** दूसरों के द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने पर भी क्रोध न करना और प्रतिशोध की भावना से मुक्त रहना।

3. **संयम (दम):** मन की चंचलता पर अंकुश लगाकर उसे विवेकयुक्त मार्ग पर स्थिर रखना।

4. **अस्तेय :** किसी अन्य की वस्तु, धन या अधिकार को अनुचित रूप से प्राप्त करने की इच्छा न रखना।

5. **पवित्रता (शौच):** शरीर और मन की आंतरिक व वाह्य स्वच्छता तथा आचार-विचार में शुद्धता बनाए रखना।

6. **इंद्रिय निग्रह :** इंद्रियों को विषय-वासना या भोग में लिप्त होने से रोककर आत्म-नियंत्रण रखते हुए सकारात्मक कार्यों को रचनात्मक दिशा देना।

7. **बुद्धि (धी):** विवेकयुक्त विचार शक्ति, जिससे सत्य-असत्य और धर्म अधर्म का स्पष्ट भेद हो सके।

8. **विद्या :** आत्मा-परमात्मा और जीवन के उद्देश्य का यथार्थ ज्ञान।

9. **सत्य :** वाणी, विचार और आचरण में पूर्ण सत्यनिष्ठा बनाए रखना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

10. अक्रोध : कठिन परिस्थिति, अपमान या विरोध के बावजूद क्रोध न करना।

व्यास जी धर्म के महत्त्व को बताते हुए कहते हैं कि :

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष न च कश्चित् शृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते॥

मैं दोनों भुजाएँ ऊपर उठाकर पुकार-पुकार कर कह रहा हूँ, किंतु मेरी बात कोई नहीं सुनता। धर्म से ही (मोक्ष के साथ-साथ) अर्थ और काम की सिद्धि होती हैं, फिर भी लोग उसका सेवन (पालन) नहीं करते।

मनुर्भवः

ऋग्वेद 10/53/6

मनुष्य बनें।

Be Human

श्रुतियों में भारत को प्राणक्षेत्र कहा गया है, जहाँ मनुष्यता को ही मंत्र माना गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मबोध एवं इंद्रिय संयम

प्रत्येक कर्म का प्रभाव समाज और प्रकृति पर पड़ता है। विवेकहीन होकर किया गया कर्म हमारी सात्विकता को क्षीण करता है और नैतिक, आध्यात्मिक तथा बौद्धिक सत्त्व का ह्रास करता है। यह सोचना भ्रम है कि निजी कार्यों का कोई व्यापक प्रभाव नहीं होता। प्रकृति का नियम है कि गुप्त कर्म भी दूरगामी प्रभाव छोड़ते हैं। पाप जब आदत बन जाए तो हम उसे पाप मानना ही छोड़ देते हैं। किंतु प्रत्येक पाप या पुण्य, चाहे वह छिपा हो या प्रकट, अपने फल के साथ जीवन में अवश्य प्रकट होता है।

वासना या विषय कोई ऐसी अनिवार्य शारीरिक आवश्यकता नहीं है, जिसके बिना मनुष्य जीवित न रह सके। भोजन न मिले तो शरीर दुर्बल हो जाता है, नींद की कमी से रोग उत्पन्न होते हैं और प्राकृतिक क्रियाओं को रोकने पर स्वास्थ्य बिगड़ता है, किंतु विषय ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है। उसे रोका जा सकता है और उसकी निवृत्ति का सामर्थ्य भी ईश्वर ने मानव को दिया है।

आज की जीवनशैली और सामाजिक वातावरण में अनेक उत्तेजक तत्त्व समाहित हो गए हैं, जिनके कारण युवाओं में कामवासना समय से पूर्व ही जागृत हो जाती है। इसी कारण विषय को अब स्वाभाविक मान लिया गया है, जबकि यह भ्रमपूर्ण धारणा है।

वास्तव में विषय की अनियंत्रित उत्तेजना और अति सर्वथा हानिकारक है। संयमित विषय-वासना से कोई भय नहीं, भय तो तब है जब यह इच्छा अपरिपक्व अवस्था में जागृत हो और तृप्ति की दिशा में प्रवृत्त हो जाए। इसके विपरीत, ब्रह्मचर्य पालन से न केवल मानसिक बल प्राप्त होता है, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य में भी अत्यधिक सुधार आता है।

ट्यूबिंगन (Tubingen) विश्वविद्यालय के प्रोफेसर 'अस्टर्लन' का मत है, "कामवासना इतनी प्रबल नहीं होती कि विवेक या नैतिक बल से उसका पूर्ण नियंत्रण संभव न हो। प्रत्येक युवक-युवती को यह शिक्षा दी जानी चाहिए कि वे उचित अवस्था

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तक संयमपूर्वक जीवन जीना सीखें। आत्मसंयम का प्रतिफल उन्हें पुष्ट शरीर, प्रबल उत्साह और स्फूर्तिदायक जीवनशक्ति के रूप में प्राप्त होता है।

इस तथ्य को जितनी बार कहा जाए, उतना ही कम है कि नैतिक शक्ति, शारीरिक संयम और पूर्ण ब्रह्मचर्य का समन्वय न केवल संभव है, बल्कि वांछनीय भी है। वैज्ञानिक या धार्मिक किसी भी दृष्टिकोण से विषय-भोग समर्थन योग्य नहीं है।

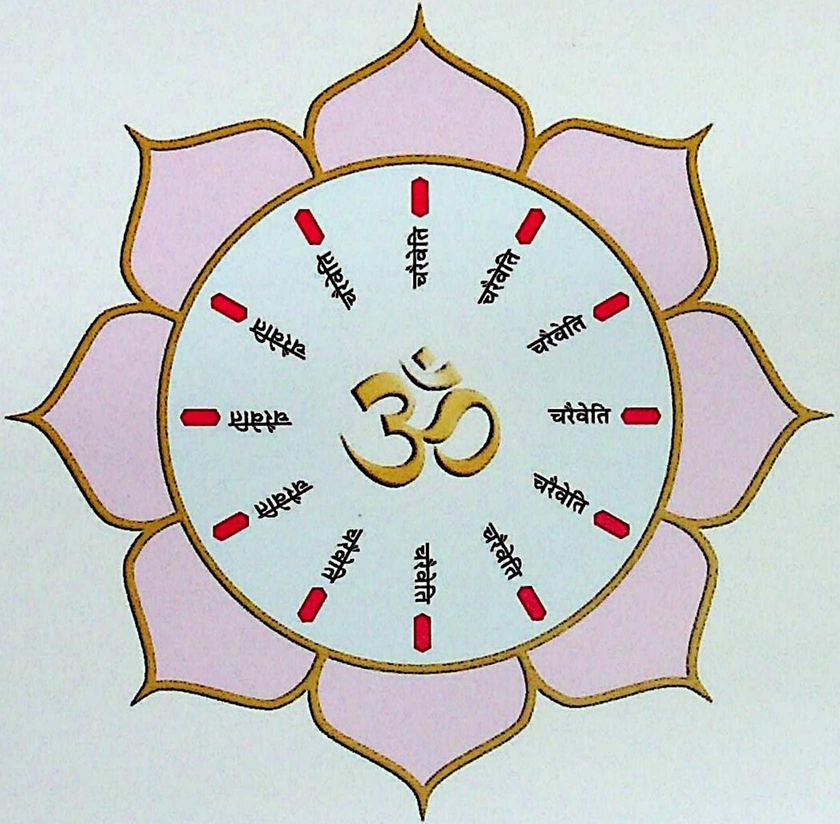

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नयी मानवता के ध्वजवाहक

हमारी पुकार तरुण भारत के लिए है। नयी सृष्टि के निर्माता युवक ही होने चाहिए, वे नहीं जो वैयक्तिक स्पर्धा को स्वीकार करते हैं या भारत के भावी आदर्श के रूप में पूँजीवादी या पश्चिम के पार्थिव कम्यूनिज्म को अपनाते हैं। वे भी नहीं जो पुरानी धार्मिक रूढ़ियों में जकड़े हुए हैं और आत्मा द्वारा जीवन की स्वीकृति और उसके रूपांतर को स्वीकार नहीं कर सकते। बल्कि वे सभी जो पूर्णतर सत्य को स्वीकार करने के लिए स्वतंत्र हैं और महत्तर आदर्श के लिए श्रम करने को तैयार हैं। वे ऐसे मानव होंगे जो स्वयं को भूत या वर्तमान को नहीं, बल्कि भविष्य को समर्पित करेंगे। उन्हें अपने संपूर्ण जीवन को अपनी निम्न सत्ता से ऊपर उठाने के लिए एकाग्रचित्त होना होगा। हमें अपने भीतर और समस्त प्राणियों में भगवान को पाना होगा। इसके साथ ही देश तथा मानवता के लिए पूरे मन और प्राण से अथक श्रम करना होगा। अभी तक यह आदर्श एक छोटा-सा बीजमात्र है और जो जीवन इसे मूर्त रूप देता है वह स्वयं एक नन्हा-सा केंद्र मात्र है, किंतु हमारी ध्रुव ध्वजा है कि यह बीज एक महान वृक्ष बनेगा और केंद्र एक सदा-विस्तृत होती हुई रचना का हृदय होगा। इस विसर्जित होते हुए जगत की अस्त-व्यस्तता में जन्म लेने के लिए नयी मानवता संघर्ष कर रही है। जो भावना हमें प्रेरणा दे रही है उसमें दृढ़ विश्वास के साथ हम उस नयी मानवता के, भावी भारत के ध्वजवाहकों में अपना स्थान लेते हैं। वह महत्तर भारत हमारी प्राचीन भारत माँ के विराट किंतु थके- मांदे शरीर का कायाकल्प करके उसे नया जीवन देगा।

श्री अरविंद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तपोभूमि हर ग्राम है

हरगोविंद सिंह

चंदन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है।।
हर शरीर मंदिर-सा पावन,
हर मानव उपकारी है।
जहाँ सिंह बन गए खिलौने,
गाय जहाँ माँ प्यारी है।
जहाँ सबेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है।।
जहाँ कर्म से भाग्य बदलते,
श्रम निष्ठा कल्याणी है।
त्याग और तप की गाथाएँ,
गाती कवि की वाणी है।
ज्ञान यहाँ का गंगाजल-सा, निर्मल है, अविराम
है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है।।
इसके सैनिक समर-भूमि में,
गाया करते गीता हैं।
जहाँ खेत में हल के नीचे,
खेला करती सीता हैं।
जीवन का आदर्श यहाँ पर, परमेश्वर का धाम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिखराव में विघटन है किंतु समन्वय में सृजन है।

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त, विकल, बिखरे हैं हो निरुपाय।
समन्वय उनका करें समस्त, विजयिनी मानवता हो जाय॥

(कामायनी (श्रद्धा सर्ग) – जयशंकर प्रसाद)

When energy is scattered astray and unstable. It serves no progress for Humanking.
But when it's channelled with unity and grace it leads humanity to victory's embrace

मनुष्य के भीतर ऊर्जा का एक असीम स्रोत विद्यमान है। यह ऊर्जा एक अदृश्य प्रेरक शक्ति के रूप में उसके चिंतन, कर्म और सृजन को दिशा देती है, परंतु जब यह शक्ति असंतुलित, दिशाहीन और बिखरी हुई होती है, तो उसका परिणाम मानसिक व्याकुलता, निष्फल प्रयासों और सामाजिक विघटन के रूप में सामने आता है।

ऐसी असंयमित ऊर्जा – चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामूहिक – अंततः केवल संघर्ष, थकान और विनाश को ही जन्म देती है। अतः इस आंतरिक शक्ति का सम्यक् समन्वय और उद्देश्यपूर्ण दिशा निर्देशन आवश्यक है।
संगठित, नियंत्रित और प्रेरित ऊर्जा ही वह प्रकाशस्तंभ बन सकती है, जो मानवता को अंधकार से प्रकाश, संघर्ष से समाधान और विघटन से विकास की ओर ले जाए। शक्ति का वास्तविक मूल्य तभी उद्घाटित होता है, जब वह समन्वित होकर सृजन का माध्यम बनती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"मनुष्य, केवल मनुष्य भर चाहिए। बाकी सब कुछ अपने आप हो जाएगा। आवश्यकता है वीर्यवान्, तेजस्वी, श्रद्धासंपन्न और दृढ़विश्वासी निष्कपट नवयुवकों की। ऐसे 100 नवयुवक भी मिल जाएँ तो संसार का कायाकल्प हो जाए। विवेकानंद जी का विश्वास था कि समाज में परिवर्तन या विश्व के पुनर्निमाण हेतु किसी विशाल जनसंख्या या संपदा की आवश्यकता नहीं बल्कि केवल मुट्ठी भर सजग जागरूक और चरित्रवान मनुष्यों की आवश्यकता है, जिनमें वीर्य, आत्मबल, विचारों की स्पष्टता और कर्म की निष्कलुषता हो। ऐसे मनुष्य ही परिवर्तन की मूल कुंजी हैं।"

– **स्वामी विवेकानंद**

शास्त्र

सनातन शास्त्रों ने ज्ञान-विज्ञान से संपूर्ण विश्व को आलोकित किया है।

सनातन शास्त्र इसी दिव्य प्रकाश से भारत और संपूर्ण विश्व को आलोकित करते रहेंगे।

सनातन शास्त्रोक्त ज्ञान हमें जैविक तथा आध्यात्मिक संपन्नता व शांति देता है। संपूर्ण विश्व की समस्याओं का समाधान सनातन शास्त्रों में ही है। शास्त्र संस्कारित जीवन शैली ब्रह्ममुहूर्त्त से सूर्यास्त तक स्व कर्म-धर्म का जीवनोपयोगी ज्ञान देता है। समस्त पाखंड और जड़ता से मुक्ति दिलाते हैं ये सनातन शास्त्र।

न लोकाद् भिद्यते शास्त्रम्
लोक से शास्त्र भिन्न नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संगीत

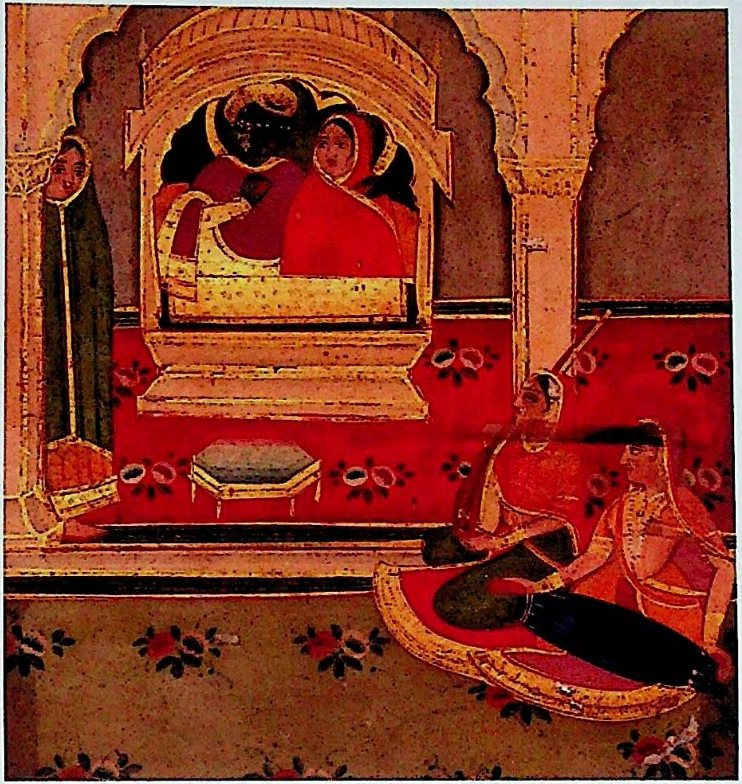

वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः।
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं निगच्छति।।

वीणा वादन का तत्त्व जानने वाला, श्रुति और जातियों में विशारद तथा ताल का ज्ञाता बिना प्रयास ही मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदयेन च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।।

न तो मैं वैकुंठ में बसता हूँ और न योगियों के हृदय में। हे नारद! मेरे भक्त जहाँ गायन करते हैं, वहीं मेरा निवास रहता है।

गीतवाद्यविनोदेन कालो गच्छति धीमताम।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।

बुद्धिमान लोग गीत और वाद्य के विनोद द्वारा समय व्यतीत करते हैं तथा मूर्ख निद्रा और कलह के व्यसन द्वारा अपना समय व्यतीत करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नान्यद्गीतात्प्रियं लोके देवानामपि दृश्यते।
शुष्कस्नायुस्वराह्लादात् त्र्यक्षं जग्राह रावणः।।

लोक में गीत से बढ़कर प्रिय और कोई वस्तु नहीं दीखती। गला शुष्क होने पर भी स्वर के आह्लाद् द्वारा रावण ने शिवजी को अपने वशीभूत किया था।

अग्निहोत्रं यथा कार्यं गान कार्यं तथैव हि।
वेदोक्तत्वात् स्मृतिप्रोक्त कर्त्तव्यत्वान्मनीषिभिः।।

जिस प्रकार अग्निहोत्र करना मनुष्यों का कर्त्तव्य है, उसी प्रकार गान करना भी मनुष्यों का कर्त्तव्य है – ऐसा वेद तथा स्मृतियाँ कहती हैं।

साम गानादद्भुतं विष्णुः प्रसीदत्यमराधिप।
न तथा यज्ञदानाद्यैः सत्यमेतन्महामुने।।

हे महामुने! देवताओं के स्वामी भगवान विष्णु सामगान द्वारा जितनी जल्दी प्रसन्न होते हैं, वैसे यज्ञ-दानादि द्वारा भी नहीं होते।

न नादेन बिना गीतं न नादेन बिना स्वरः।
न नादेन बिना नृत्तं तस्मान्नादात्मकं जगत्।।

न तो नाद के बिना गीत है, न नाद के बिना स्वर है, न नाद के बिना नृत्य है, यह समस्त जगत ही नादात्मक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नास्ति नादात्परोमंत्रः न देवः स्वात्मनः परः।
नानुसंधेः परापूजा न हि तृप्तेः परमसुखम् ॥

नाद से बड़ा कोई मंत्र, आत्मा से बड़ा कोई देव, नादानुसंधान से बड़ी कोई पूजा और तृप्ति से बड़ा कोई सुख नहीं है।

साहित्यसंगीतकला विहीनः।
साक्षात् पशु पुच्छविषाण हीनः॥

साहित्य, संगीत और कला से विहीन व्यक्ति बिना सींग और पूँछ के पशु के समान है।

नादाब्धेस्तु परं पारं, न जानाति सरस्वती।
अद्यापि मज्जनभयात्, तुम्बीं वहति वक्षसि॥

नाद का पार सरस्वती भी नहीं जानतीं, सम्भवतः इसीलिए डूबने के भय से बचने के लिए उन्होंने अपने वक्ष पर दो तुम्बियाँ धारण कर रखी हैं।

पूजाकोटिगुणं स्तोत्रं स्तोत्रात्कोटिगुणो जपः।
जपात्कोटिगुणं गानं गानात् परतरं न हि॥

पूजा से करोड़ गुना श्रेष्ठ स्तोत्र होता है, स्तोत्र से करोड़ गुना जप और जप से करोड़ गुना श्रेष्ठ गान होता है, गान से परे कुछ नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आयुर्वेदो अमृतानाम्
शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्
पहला सुख निरोगी काया।

यजुर्वेद के रुद्राध्याय में वन, वृक्ष, वनस्पतियों, अरण्यों के लिए आदर, उनके संरक्षण, उनके सदुपयोग तथा उनसे शांति प्राप्त करने के संकेत मिलते हैं। इस अध्याय में रुद्र के विविध स्वरूपों का वर्णन किया गया है। रुद्र के दो मुख्य रूप हैं – कल्याणकारी रूप और विनाशकारी रूप। रुद्र के कल्याणकारी रूप को 'शिव' कहते हैं और विनाशकारी अर्थात रौद्र रूप को 'रुद्र' कहा जाता है। जब प्रकृति के विभिन्न घटक शुद्ध एवं संतुलित होते हैं, तब वे शिवरूप होते हैं, किंतु जब यही तत्त्व प्रदूषित हो जाते हैं तो वे रौद्रस्वरूप धारण कर लेते हैं।

वनानां पतये नमः। वृक्षाणां पतये नमः।
औषधीनां पतये नमः। अरण्यानां पतये नमः॥

(यजु0 16/17-20)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥

इस संपूर्ण ब्रह्मांड में जो कुछ भी (जड़ या चेतन) है, वह सब ईश्वर से प्राप्त है। इसलिए त्यागपूर्वक भोग करें, लालच मत करें, यह धन किसका है? अर्थात यह धन किसी का नहीं है।

ईशावास्योपनिषद् का यह एक मंत्र ही संपूर्ण मानवता का शास्त्र है। यदि मानव इस मंत्र के गूढ़ मंतव्यों को समझकर जीवन में उतार ले तो संसार का कायापलट हो जाए। यह धरती ही स्वर्ग बन जाए।

संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे, संजानाना उपासते॥

(ऋग्वेद 10/191/2)

मिलकर चलो, एक साथ बोलो। तुम्हारे मन आपस में एक जैसे हो जाएं। जैसे प्राचीन काल के देवता आपसी समझ-बूझ और समरसता के साथ अपना-अपना कर्त्तव्य निभाते हुए यज्ञ में सहभागी होते थे।

यह मंत्र मनुष्यों को एकता, समन्वय और सामूहिक चेतना की प्रेरणा देता है। यही विचार किसी भी यज्ञ अर्थात महान कार्य की सिद्धि का आधार होते हैं।

मनुष्यता ही मंत्र है
चरैवेति चरैवेति चरैवेति...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मातृ-भू-वंदना

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!
सुजलाम्, सुफलाम्,
मलयज शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम्, मातरम्!
वंदे मातरम्!
शुभ्रज्योत्सनाम् पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम्, मातरम्!
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्॥

माता भूमिः पुत्रोहम् पृथिव्याः
अर्थववेद - १२/१/१२
पृथ्वी हमारी माता है हम सब उसकी संतानें हैं।
We are the Children of Mother Earth.

बी.27/98 ए-8, नवाबगंज रोड, दुर्गाकुंड, वाराणसी, उत्तर प्रदेश-221010
सम्पर्कः (+91)9670007733 (सनातनी रामानन्द)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh